The Chitransh Academic & Research
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 4 | September 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

तकनीकी युग में हिंदी भाषा की चुनौतियाँ

अभयराज सिंह

सहायक आचार्य, कला संकाय नंदकिशोर सिंह पी. जी. कॉलेज धनुहा, चाका, नैनी, प्रयागराज – उत्तर प्रदेश (भारत)

लेख विवरण

शोधपत्र

प्राप्ति तिथि: 18/09/2025
स्वीकृति तिथि: 24/09/2025
प्रकाशनतिथि: 30/09/2025

मुख्य शब्द : तकनीकी युग, हिंदी भाषा, डिजिटल माध्यम, भाषाई चुनौतियाँ, सूचना प्रौद्योगिकी।

सारांश

इक्कीसवीं सदी को तकनीकी युग कहा जाता है, जहाँ सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को गहराई से प्रभावित किया है। भाषा भी इस परिवर्तन से अछूती नहीं रही है। हिंदी, जो भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ जनसामान्य की संपर्क भाषा है, तकनीकी माध्यमों में निरंतर विस्तार तो कर रही है, परंतु इसके समक्ष अनेक गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो रही हैं। डिजिटल माध्यमों में अंग्रेज़ी का वर्चस्व, हिंदी के मानकीकरण की समस्या, तकनीकी शब्दावली का अभाव, देवनागरी लिपि से जुड़ी सीमाएँ, सोशल मीडिया पर भाषा का विकृत स्वरूप, तथा युवाओं में हिंदी के प्रति घटती संवेदनशीलता जैसी समस्याएँ प्रमुख हैं। यह शोध-पत्र तकनीकी युग में हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति, प्रमुख चुनौतियों, उनके कारणों और संभावित समाधानों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

1. प्रस्तावना

हिंदी भाषा भारतीय समाज की सांस्कृतिक और बौद्धिक पहचान का अभिन्न अंग है। तकनीकी क्रांति के इस युग में संप्रेषण के साधनों ने भाषा की अभिव्यक्ति को सरल अवश्य बनाया है, लेकिन इसके साथ ही कई भाषिक समस्याएँ भी सामने आई हैं। हिंदी की तकनीकी मंचों पर उपस्थिति तो बढ़ी है, किंतु वह अभी तक पूर्णतः सशक्त और प्रतिस्पर्धी नहीं बन पाई है।

2. तकनीकी युग की अवधारणा

तकनीकी युग वह कालखंड है जहाँ कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सोशल मीडिया जैसे उपकरणों ने कार्य, संचार और शिक्षा को नई दिशा दी है। इसमें भाषा केवल विचारों की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सूचना और तकनीकी दक्षता का आधार बन चुकी है।

3. हिंदी की वर्तमान स्थिति

3.1 डिजिटल मंचों पर विस्तार

हिंदी सामग्री की उपलब्धता सरकारी पोर्टलों, ई-पत्रिकाओं, ब्लॉग और यूट्यूब चैनलों पर तेजी से बढ़ी है, जिससे जनसामान्य की डिजिटल भागीदारी सशक्त हुई है।

3.2 शिक्षा में उपस्थिति

ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल पाठ्यसामग्री में हिंदी की उपस्थिति सराहनीय है, परंतु वैज्ञानिक व तकनीकी उच्च शिक्षा में इसका विस्तार सीमित है।

3.3 तकनीकी उपकरणों में हिंदी

स्मार्टफोन, कीबोर्ड, वॉयस कमांड, ट्रांसलेशन टूल्स में हिंदी का प्रयोग संभव है, लेकिन अभी भी अंग्रेज़ी की तुलना में हिंदी की सटीकता और सहजता कम है।

Corresponding Author: abhaysingh72020@gmail.com

4. प्रमुख चुनौतियाँ

- **अंग्रेजी वर्चस्व:** तकनीकी शब्दावली और डिजिटल विश्व में अंग्रेजी का दबदबा
- **तकनीकी शब्दावली का अभाव:** सरल, मानकीकृत शब्दों की कमी
- **देवनागरी की तकनीकी सीमाएँ:** फॉन्ट, टाइपिंग, स्पेल-चेक समस्याएँ
- **सोशल मीडिया पर विकृति:** रोमन लिपि में लेखन, अशुद्ध भाषा
- **युवा वर्ग की उदासीनता:** हिंदी के प्रति आकर्षण की कमी
- **उच्च शिक्षा में सीमितता:** तकनीकी विषयों की गुणवत्तापूर्ण सामग्री का अभाव

5. सोशल मीडिया और हिंदी

सोशल मीडिया ने हिंदी को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान किया है। परंतु रोमन लिपि, संक्षेपों, अशुद्ध वर्तनी तथा अंग्रेजी मिश्रण ने भाषा की शुद्धता को क्षति पहुँचाई है।

6. हिंदी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)

AI जैसे गूगल असिस्टेंट, चैटबॉट्स, वॉयस-टू-टेक्स्ट सेवाओं में हिंदी का उपयोग बढ़ रहा है। फिर भी, डेटा की कमी, व्याकरणिक जटिलताएँ और तकनीकी संसाधनों की सीमितता, हिंदी को पूर्णतया सक्षम नहीं बना पाई हैं।

7. सामाजिक व सांस्कृतिक कारण

- **औपनिवेशिक प्रभाव:** अंग्रेज़ी को श्रेष्ठ मानने की मानसिकता
- **वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद:** पश्चिमी मूल्यों को अपनाने की प्रवृत्ति, जिससे हिंदी हाशिये पर जाती दिखती है।

Corresponding Author: abhaysingh72020@gmail.com

8. संभावित समाधान

- **तकनीकी शब्दावली निर्माण:** सरल और व्यवहारिक शब्दावली विकसित हो
- **हिंदी-अनुकूल ऐप्स और टूल्स:** सॉफ्टवेयर और स्मार्ट कीबोर्ड्स
- **शिक्षा में समन्वय:** तकनीकी पाठ्यक्रमों में हिंदी संसाधन
- **भाषा जागरूकता अभियान:** सोशल मीडिया पर शुद्ध हिंदी का प्रचार
- **सरकारी प्रयास:** हिंदी को तकनीकी नीति में सशक्त स्थान देना

9. शोध निष्कर्ष

तकनीकी युग में हिंदी के समक्ष चुनौतियाँ तो हैं—परंतु समाधान भी स्पष्ट हैं। हिंदी की डिजिटल उपस्थिति सशक्त हो रही है। आवश्यकता है कि तकनीकी भाषा के रूप में हिंदी को सक्षम बनाने हेतु संगठित, नीति-आधारित और व्यावहारिक प्रयास किए जाएँ।

10. निष्कर्ष

हिंदी को भावनात्मक नहीं, **तकनीकी और व्यावसायिक रूप में सशक्त बनाना समय की माँग है। तभी यह वैश्विक मंच पर अपनी पहचान कायम रख सकेगी।** यदि हिंदी तकनीक की भाषा बनेगी, तभी उसका भविष्य सुरक्षित, **समृद्ध और व्यापक होगा।**

संदर्भ सूची

1. आचार्य, रामचंद्र. (2020). *हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. मिश्र, शिवकुमार. (2019). *डिजिटल युग में भाषा और समाज.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
3. सिंह, नामवर. (2018). *भाषा, संस्कृति और संचार.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
4. सिंह, सुरेश. (2021). *तकनीकी युग और हिंदी भाषा.* नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
5. तिवारी, भोलानाथ. (2017). *हिंदी भाषा की संरचना और विकास.* दिल्ली: किताब महल।
6. त्रिपाठी, राकेश. (2020). *सोशल मीडिया और भाषा परिवर्तन.* नई दिल्ली: अंजलि प्रकाशन।
7. शुक्ल, गोपालदास. (2019). *हिंदी और वैश्वीकरण.* वाराणसी: भारतीय ज्ञानपीठ।

Corresponding Author: abhaysingh72020@gmail.com

8. पांडेय, अनिलकुमार. (2021). *कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारतीय भाषाएँ*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
9. भारत सरकार. (2020). *डिजिटल इंडिया और राजभाषा हिंदी*. नई दिल्ली: सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय।
10. भारत सरकार. (2019). ***राजभाषा नीति और तकनीकी अनुप्रयोग***. नई दिल्ली: गृह मंत्रालय।